International Research Journal of Management Science & Technology

ISSN 2250 – 1959(0nline)
2348 – 9367 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMST.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

विकसित भारत 2047 की दृष्टि से आधुनिक शिक्षा में आवश्यक सीखने और महत्वपूर्ण सोच को बढ़ाने के लिए पाठ्यक्रम सामग्री कम करना

रीना कुमारी
असिस्टेंट प्रोफेसर, मुंडेश्वरी कॉलेज फॉर टीचर एजूकेशन, पटना।

सारांश

दशकों से उच्चतर शिक्षा का विनियम बहुत सख्त रहा है, जिसे बहुत कम प्रभाव के साथ विनियमित करने का प्रयास किया गया है। विनियाम प्रणाली का कृत्रिम और विघटनकारी स्वभाव बहुत ही बुनियादी समस्याओं से प्रभावित रहा है। भारत में 2020 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति जैसी पहलों की अगुवाई में शिक्षा में बड़े पैमाने पर बदलाव हो रहा है। इस परिवर्तनकारी नीति का एक मुख्य सिद्धांत पाठ्यक्रम सामग्री में कमी करना है, जिसका उद्देश्य आवश्यक सीखने और महत्वपूर्ण सोच के लिए प्रर्याप्त स्थान बनाता है।

दशकों से चली आ रही उच्चत्तर शिक्षा में यह बदलाव "सबसे अधिक बेहतर" है कि पारंपरिक धारणा को चुनौती देता है और यह ज्ञान की व्यापकता के बजाय उसकी गहराई पर ध्यान केन्द्रित करता है। जिससे नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 का व्यापक प्रभाव देखने को मिलता है।

आवश्यक सीखने और महत्वपूर्ण सोच को बढ़ाने के लिए पाठ्यक्रम सामग्री कम करना एक राष्ट्रीय शिक्षा नीति का प्रभावी तरीका है। इससे छात्रों को मुख्य अवधारणाओं पर ध्यान केन्द्रित करने में मदद मिलती है जो उन्हें बेहतर ढ़ंग से समझने और अवधारना करने में मदद करता है। इसके अतिरिक्त यह छात्रों को अलोचनात्मक सोच ओर समाधान कौशल विकसित करने में भी सक्षम बनाता है। शिक्षण प्रक्रिया शिक्षार्थी केन्द्रित जिज्ञासा, खोज, संवाद के आधार पर लचीला है।[1]

प्रस्तावना

शिक्षा का वास्तविक अर्थ व्यक्ति का सर्वागिंन विकास करना है। शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति भी बौद्धिक, सांस्कृतिक, सामाजिक तथा अध्यत्मिक विकास होता है। शिक्षा उसके जीवन को अर्थपूर्ण बनाती है। उसके व्यवहार में परिवर्तन तथा परिवर्धन करती है जो कि व्यक्ति, समाज, राष्ट्र, देश तथा विश्व कल्याण के लिए आवश्यक है।

यदि प्राथमिक शिक्षा से ही पाठ्यक्रम सामग्री कम हो तो बुनियाद सही व ठोस हो तथा उचित मार्गदर्शन की प्राप्ति हो तो ऐसी स्थिति में शिक्षा बच्चे के लिए कभी समस्या नहीं बन सकती। किसी भी राष्ट्र के लिए प्रगति, समृद्धि, संस्कृति का मुलाधार शिक्षा होती है। शिक्षा को राष्ट्र उत्थान का मुल तत्व माना गया है क्योंकि यह देश की जाने वाली कामों की रीढ़ होती है। अतएव शिक्षण में दृश्य, श्रव्य व दृश्य श्रव्य सामग्री द्वारा विद्यार्थियों की रूचियों व अभिवृतियों को

विकसित किया जा सकता है। कक्षा अध्यापन के मसक्ष कुछ विद्यार्थी एजूकेशन विषय की संकल्पनाओं को रख लेते हैं, पर उनकी समझ नहीं रख पाते हैं। इसलिए परीक्षा में संतोषजनक प्रदर्शन नहीं कर पाते। यहाँ यह विचार किया जाना भी आवश्यक है कि आपेक्षित प्रदर्शन नहीं किये जाने के कारणों को चिन्हांकित किया जा सकता है। एजूकेशन विषय में शिक्षण अधिगम सामग्री का प्रयोग शिक्षण को प्रेरित करता है तथा अध्ययन को स्पष्ट तर्क संगत एवं क्रमबंद्ध रूप से समझने की क्षमता विकसित करता है।[2]

पाठ्यक्रम सामग्री कम करने का उद्देश्य

- आवश्यक सीखने और महत्वपूर्ण सोच को बढ़ावा देना।
- शिक्षण अधिगम सामग्री द्वारा एजूकेशन पढ़ने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि ज्ञात करना।[3]
- शिक्षण अधिगम सामग्री द्वारा एजूकेशन पढ़ने वाले विद्यार्थियों की अभिरूचि ज्ञात करना।
- शिक्षण अधिगम सामग्री से पढ़ने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि ओर एजूकेशन विषय में अभिरूचि के मध्य सहसंबंध ज्ञात करना।
- NEP के नये शिक्षण विधि द्वारा एजूकेशन विषय का अध्ययन करना विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि ज्ञात करना।
- NEP के नये शिक्षण विधि द्वारा एजूकेशन पढ़ने वाले विद्यार्थियों की अभिरूचि ज्ञात करना।
- NEP के नये शिक्षण विधि शिक्षण अधिगमक सामग्री द्वारा एजूकेशन अध्यापन से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का पता लगाना।[4]

यह दृष्टिकोण छात्र को मुख्य अवधारणाओं को बेहतर ढ़ंग से समझने, उन्हें याद रखने और महत्वपूर्ण सोच, कौशल विकसित करने में छात्रों को गहरी समझ करने में मदद करता है।

पाठ्यक्र सामग्री कम करने के लाभ

राष्ट्रीय शिक्षा नीति द्वारा पाठ्यक्रम की सामग्री को कम करने के गहन लाभों पर ध्यान दें, तथा देखे कि यह पुर्नसंतुलन किस प्रकार अधिक समृद्ध शैक्षिक अनुभव के लिए बुनियाद का काम करता है।

मुख्य अवधारणाओं पर ध्यान केन्द्रित

पाठ्यक्रम सामग्री को कम करने और मुख्य अवधारणाओं पर ध्यान केन्द्रित करके, महत्वपूर्ण सोच और प्रभावी सीखने को बेहतर बनाया जा सकता है। इससे छात्रों को जानकारी का बेहतर ढ़ंग से समझने, याद रखने और लागू करने में मदद मिलती है। पाठ्यक्रम को छोटा करके, शिक्षक छात्रों को न केवल क्या सीखना है, बल्कि कैस सीखाना है, यह भी सिखाते हैं।

पारंपरिक शैक्षणिक मॉडल में छात्रों को अक्सर विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला से भर दिया जाता है, जिसके परिणाम स्वाध्याय जमीनी स्तर की समझ होती है जिसमें गहराई का अभाव होता है। पाठ्यक्रम सामग्री को उसके मूल आवश्यक तत्वों तक सीमित करने की प्रथा को अपनाकर शिक्षक गहन समझ को क्षमता को अनलॉक करते हैं। यह जानबूझकर किया गया ध्यान छात्रों को महत्वपूर्ण अवधारणाओं में गहराई से उतरने में समक्षम बनता है, जिससे विषय वस्तु की अधिक गहण खोज को बढ़ावा मिलता है। व्यापक से गहराई दृष्टिकोण से हटकर यह बदलाव ज्ञान की

आजीवन खोज की नींव रखता है। बौद्धिक जिज्ञासा को बढ़ावा देता है और सामग्री के लिए प्रशंसा करता है।

पाठ्यक्रम को सुव्यवस्थित करना परिवर्तनकारी आवश्यक शिक्षण अनुभवों के लिए उत्प्रेरक बन जाता है जो रटने की आदत से उपर उठकर, विद्यार्थियों को समझने के लिए वास्तविक जुनून के साथ आजीवन शिक्षार्थी बनने के लिए सशक्त बनता है।

प्रश्न आधारित पुछताछ शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों को सोच को बढ़ावा देना

पाठ्यक्रम सामग्री में कमी न केवल राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) के दृष्टिकोण के अनुरूप है बल्कि यह सोच से शिक्षाशास्त्र के निर्बाध एकीकरण के लिए रास्ते भी खोलती है। पाठ्यक्रम को सुव्यवस्थित करके शिक्षक एक ऐसा दृष्टिकोण बना सकता है जहाँ पूछ–ताछ आधारित शिक्षा चर्चा उन्मुख दृष्टिकोण और विश्लेषण संचालित विधियाँ केन्द्र में है।[5]

रटने की आदत से हटकर सक्रिय भागीदारी की ओर यह जान–बुझकर किया गया बदलाव गतिशील कक्षा के माहौल का आधार बनता है जिससे ऐसा माहौल बनता है जहाँ जिज्ञासा पनपती है और बौद्धिक अन्वेषण को सक्रिय रूप से प्रोत्साहित किया जाता है। इसके अलावा, सुव्यवस्थित पाठ्यक्रम शिक्षकों को छात्रों में सृजनात्मक सोच कौशल पर जोर देने और उन्हें विकसित करने के लिए आवश्यक स्थान ओर समझ प्रदान करता है। सूचना से भरी दुनिया में, सूचना का विश्लेषण, मूल्यांकन और संश्लेषण करने की क्षमता सर्वोपरी है। ध्यान केन्द्रित करने की यह जानबूझकर संकीर्णता शिक्षकों को सृजनात्मक सोच को बढ़ावा देने के लिए विशेष रूप से डिजाइन की गई है जिससे गतिविधियों और आकलन को शामिल करने का अधिकार देती है।[6]

समस्या समाधान अभ्यास से लेकर सहयोगात्मक परियोजना और केस अध्ययनों तक छात्रों को ने केवल प्रोत्साहित किया, बल्कि उन्हें आलोचनात्मक ढ़ंग से सोचने, सार्थक प्रश्न पूछने और रचनात्मक और विश्लेषणात्मक मानसिकता के साथ चुनौतियों का सामना करने के लिए भी तैयार किया जाता है।

बेहतर अवधारणा

पाठ्यक्रम की सामग्री को कम करना ज्ञान के बेहतर प्रतिधारण और व्यवहारिक अनुप्रयोग के लिए उत्प्रेरक साबित होता है। पारंपिरिक मॉडल में विषयों की अधिकता से जूझने वाले छात्र आवश्यक अवधारणाओं में महारत हासिल करने के लिए आवश्यक समय समर्पित करने के लिए संघर्ष करते हैं। हलांकि एक सुव्यवस्थित पाठ्यक्रम केन्द्रित सीखने के लिए आवश्यक सांस लेने की जगह प्रदान करता है। जिससे छात्रों को महत्वपूर्ण जानकारी को याद रखने की अनुमति मिलती है। यह बढ़ी हुई अवधारणा तब तक वास्तविक दुनिया के परिदृश्य में व्यवहारिक अनुप्रयोग के लिए आधारशिला बन जाती है, जिससे छात्रों को सैद्धांतिक समझ और ठोस समस्या समाधान कौशल के बीच की खाई को पाटने में मदद मिलती है।

रटने के लिए व्यवहारिक अनुप्रयोग तक के संक्रमण में एक सुव्यवस्थित पाठ्यक्रम एक समग्र और कौशल विकसित करता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति द्वारा ध्यान केन्द्रित करने की संकीर्णताओं छात्रों को सैद्धान्तिक रूप–रेखा से परे जाने और व्यवहारिक स्थितियों से जुड़ने के लिए प्रोत्साहित करती है। जिससे सामग्री की गहरी समझ को बढ़ावा मिलता है।[7]

यह बदलाव छात्रों में सृजनात्मक सोच कौशल से लैस करता है। जिससे वे सिद्धांतों को वास्तविक दुनिया की चुनौतियों से जोड़ पाते हैं। नतीजतन वे न केवल अकादमिक रूप से तैयार होता है बल्कि कक्षा से परे अपने पेशेवर सफर में आने वाली जटिलताओं के लिए आवश्यक अनुकूलनशीलता और समस्या समाधान कौशल भी रखते हैं।

तनाव की कमी और खुशहाली

विद्यालयों एंव महाविद्यालयों में ये सामान्य सूचना अधिभार छात्रों को तनावग्रस्त और थका हुआ महसूस कर सकता है। लेकिन अगर हम पाठ्यक्रम को सुव्यवस्थित बनाते हैं तो छात्रों को सब कुछ बहुत जल्दी सीखने का इतना दबाव महसूस नहीं होगा। यह परिवर्तन छात्रों को हमेशा ढ़ेर सारी चीजों का अध्ययन करने की चिंता किए बिना महत्वपूर्ण चीजों को वास्तव में समझने पर ध्यान केन्द्रित करने देता है। इसलिए चीजों को सरल बनाकर हम सीखने को कम तनावपूर्ण बनाते हैं और ऐसा महौल बनाते हैं जो हमारी भलाई के लिए बेहतर है। साथ ही, पारंपरिक शिक्षा व्यवस्था में छात्र अक्सर तनाव महसूस करते हैं क्योंकि कम समय में सीखने के लिए बहुत कुछ होता है। लेकिन अगर हम पाठ्यक्रम को कम कर दें तो शिक्षक इस दबाव को कम कर सकते हैं। मतलब यह है कि छात्रों को हमेशा ऐसा नहीं लगेगा कि वे पीछे रह गए हैं। यह एक शिक्षा लेने और ध्यान केन्द्रित करने जैसा है जो वास्तव में महत्वपूर्ण है। इसलिए कम पाठ्यक्रम न केवल सीखने को आसान बनाता है; यह छात्रों के लिए इसे अधिक आरामदायक और स्वस्थ अनुभव भी बनाता है।[8]

आलोचनात्मक कौशल (सोच) का विकास

पाठ्यक्रम की सामग्री को कम करने, आवश्यक सीखने और आलोचनात्मक सोच कौशल को बढ़ाया जा सकता है। इस दृष्टिकोण से छात्र को मुख्य अवधारणाओं को गहराई से समझने, जानकारी को बेहतर ढ़ंग से याद रखने और आलोचनात्मक सोच समताओं को विकसित करने का अवसर मिलता है। यह मात्रा से गुणवत्ता की ओर एक बदलाव को बढ़ावा देता है।

जब छात्र जानकारी को खुद समझने की कोशिश करते हैं तो वे आलोचनात्मक सोच कौशल का विकास करते हैं। पाठ्यक्रम की सामग्री को कम करके छात्रों को जानकारी का विश्लेषण करना, उसका मूल्यांकन करने और अपने विचारों को व्यक्त करने का अवसर मिलता है।[9]

आकर्षण शिक्षण वातावरण

पाठ्यक्रम की विषय वस्तु में कमी के साथ, कक्षा सत्र अधिक संवदात्मक, आनंददात्मक और सहयोगात्मक स्थानों में रूपांतरित हो जाता है। विषय वस्तु को संक्षिप्त करने के लिए (एनईपी) राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 का जोर अधिक छात्र केन्द्रित मॉडल की ओर प्रतिमान बदलाव के साथ रेखांकित होता है।

शिक्षकों को नवीन–नवीन शिक्षण विधियों में अपनाने को अधिकार दिया जाता है। जो जिज्ञासा जागती है और भागीदारी को बढ़ावा देती है। छात्र अपने सीखने की मात्रा में सक्रिय योगदानकर्ता बन जाते हैं और कक्षा बौद्धिक अदान–प्रदान के जीवंत केन्द्र में बदल जाती है।[10]

व्यक्तिगत शिक्षण

यह समझते हुए की हर छात्र अलग होता है एक सुव्यवस्थित पाठ्यक्रम शिक्षकों को व्यक्तिगत जरूरतों के हिसाब से सीखने को समायोजित करने की अनुमति देता है। इसका मतलब है कि छात्रों को उनकी अनूठी रूचियों और ताकतों के साथ अधिक व्यक्तिगत शिक्षा मिलती है। वे अपने सीखने की मात्रा की जिम्मेदारी खुद उठा सकते हैं और खुद ज्यादा नियंत्रण और स्वतंत्र महसूस कर सकते हैं। इस तरह, शिक्षा एक ही तरह की नहीं रह जाती बल्कि यह ज्यादा लचीली हो जाती है और हर छात्र की जरूरत और पसंद के हिसाब से ढ़ल जाती है। इसके अलावा कम पाठ्यक्रम में शिक्षक और भी अधिक लचीले हो सकते हैं। वे छात्रों के सीखने के तरीके के अनुसार अपने पढ़ाने के तरीके में बदलाव कर सकते हैं। इससे सभी के लिए सीखना अधिक दिलचस्प हो जाता है। छात्रों को लगता है कि उनकी शिक्षा में उनकी बात सुनी जाती है, जिससे पूरा अनुभव अधिक दिलचस्प हो जाता है।[11]

इसलिए, सीखने का एक निश्चित तरीका अपनाने के बजाय छात्रों को अपनी शक्तियों और रूचियों को सामने लाने का अवसर मिलता है, जिससे शिक्षा में उनमें से प्रत्येक के लिए एक व्यक्तिगत साहसिक कार्य बन जाती है।

समस्या समाधान कौशल

जब छात्र वास्तविक दुनिया की समस्याओं को हल करते हैं तो उनका समस्या समाधान कौशल का विकास होता है। यह छात्रों को गहराई से सोचने, ज्ञान को व्यवहारिक रूप से लागू करने और समस्याओं को हल करने में सक्षम बनाता है। यह सब तभी संभव हो पायेगा जब पाठ्यक्रम की सामग्री को कम करने और समस्या समाधान कौशल को बढ़ावा मिलेगा जिससे महत्वपूर्ण सोच को विकसित और हर परिस्थिति यों से निकलने में मदद मिलेगी।[12]

सक्रिय भागीदारी

ऐसे कई कौशल हैं जो छात्रों के लिए खुद में अपनी शिक्षा को बेहतर बनाने के लिए आवश्यक है। इनमें से कई कौशल कम उम्र में ही सिखाए जानी चाहिए और जैसे–जैसे वे बड़े होते हैं और विकसित होते हैं उनका अभ्यास किया जाना चाहिए। समस्या समाधान, सहयोग ओर आलोचनात्मक सोच जैसे कौशल कक्षा के अंदर और बाहर छात्रों के लिए महत्वपूर्ण है।

छात्रों के लिए सृजनात्मक सोच कौशल विकसित करना विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। छात्रों को कई परिस्थितियों में सृजनात्मक सोच कौशल की आवश्यकता होती है। जैसे कि एजूकेशन के कई समस्या के हल करने की कोशिश करना, अपने घर से काम पर जाने का सबसे अच्छा तरीका पता लगाना या किसी प्रकार की पहेली को हल करना।[13]

छात्रों के सक्रिय भागीदारी में छात्रों के सृजनात्मक सोच और आलोचनात्मक सोच कौशल की विकसित करने का एक–एक तरीका है। पाठ्य में सक्रिय भागीदारी बनाना और सहयोग करने में मदद करना, यदि कोई शिक्षक ऐसा महौल बना सकता है जहाँ छात्र एक साथ काम करते हैं, सीखने में भाग लेते है। और एक दूसरे से सीखते हैं तो छात्र इन कौशलों को विकसित करना शुरू कर सकते हैं।

समय का बचत

पाठ्यक्रम की सामग्री को कम करने से छात्रों को अधिक समय मिलता है कि वे महत्वपूर्ण अवधारणाओं को समझने और उनका अभ्यास करने में अधिक समय दे ताकि शिक्षक ओर विद्यार्थी दोनों का समय बचे और महत्वपूर्ण अवधारणाओं पर अधिक और पुनः बल दिया जा सके।[14]

आजीवन सीखने की तैयारी

जैसे–जैसे देश और दुनिया तेजी से बदल रही है, अनुकूलनशीलता और निरंतर सीखना सफलता के लिए अपरिहार्य कौशल बन गए हैं। मुख्य अनिवार्यताओं पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए पाठ्यक्रम को छोटा करके, शिक्षक न केवल छात्रों को वह सीखाते हैं जो उन्हें जानना चाहिए, बल्कि वे इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि उन्हें कैसे सिखाना है। यह परिवर्तनीय दृष्टिकोण सीखने के प्रति जुनून पैदा करता है और छात्रों को शोध आलोचनात्मक (सकारात्मक और नकारात्मक) समस्या समाधान जैसे आवश्यक कौशल से लैश करता है। नतीजतन छात्र न केवल ज्ञान को प्राप्तकर्ता है बल्कि अपनी शिक्षा में सक्रिय भागीदारी है जो भविष्य में सफल होने के लिए तैयार है। जहाँ अनुकूलन और निरंतर सीखना सफलता है प्रमुख निर्धारक है।[15]

बेहतर और सटीक मूल्यांकन

एक केन्द्रित पाठ्यक्रम के माध्यम से आवश्यक शिक्षा औरी सृजनात्मक सोच को बढ़ाने के क्षेत्र में सटीक मूल्यांकन के महत्व को कम करके नहीं आका जा सकता है। एक केन्द्रित पाठ्यक्रम, प्रशिक्षकों को मूल्य अवधारणाओं के साथ–साथ जटिल रूप से रेखांकित मूल्यांकन डिजाइन करने में सक्षम बनाता है।

यह लक्षित दृष्टिकोण प्रत्येक छात्र की आवश्यक ज्ञान की समझ की एक स्पष्ट तस्वीर पेश करता है जो सतही समझ से आगे बढ़कर उनकी समझ की गहराई का आकलन करता है। इन आकलनों में सटीकता न केवल छात्र की समझ का अधिक सटीक मूल्यांकन करने में मदद करती है बल्कि व्यक्तिगत प्रतिक्रिया और हस्तक्षेप के लिए भी द्वार खोलती है। इसव अनुकूल सहायक प्रणाली के माध्यम से शिक्षक यह सुनिश्चित करते हैं कि यह छात्रों को उनकी आवश्यकता अनुसार विशिष्ट सहायता मिले तथा एक ऐसा शिक्षण वातावरण विकसित हो जहाँ सफलता को केवल मापा ही नहीं जाता बल्कि सक्रिय रूप से विकसित भी किया जाता है।[16]

पाठ्यक्रम सामग्री कम करने के तरीके–

– विषयों को व्यवस्थित करें।
– शिक्षकों को प्रशिक्षित करें।
– आवश्यक सामग्री का चयन करें।
– समय सीमा निर्धारित करें।
– अतिरिक्त सामग्री को हटा दें।
– मुख्य अवधारणाओं पर ध्यान केन्द्रित करें।
– शिक्षण विधियों का उपभोग करें।
– आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा दें।[17]

संक्षेप में आवश्यक सीखने और महत्वपूर्ण सोच को बढ़ावा देने के लिए पाठ्यक्रम सामग्री कम करना एक प्रभावी तरीका है। इससे छात्रों को विषय का मुख्य बिन्दु को बेहतर ढ़ंग से

समझने और सीखने की प्रक्रिया में अधिक रूचि रखने में मदद मिलती है। छात्रों के बीच आवश्यक शिक्षण और सृजनात्मक सोच को बेहतर बनाने के लिए पाठ्यक्रम की सामग्री को कम करने के कई लाभ हैं। यह दृष्टिकोण मात्र से गुणवता की ओर बदलाव को बढ़ावा देता है। मुख्य अवधारणाओं की गहरी समझ बेहतर अवधारणा और सृजनात्मक सोच कौशल के विकास पर जोर देता है। अधिक अनुकूलित और कम तनावपूर्ण आवश्यक शिक्षण अनुभव प्रदान करके, शिक्षक आजीवन शिक्षार्थियों की भावी पीढ़ी के लिए मंच तैयार करते हैं जो लगातार बदलती दुनिया की जटिलताओं को समझने में सक्षम है। सुव्यवस्थित पाठ्यक्रम न केवल सामग्री में कमी लाता है बल्कि अधिक समृद्ध ओर सशक्त शैक्षिक यात्रा का प्रवेश द्वार बन जाता है।

संदर्भ–

1. मालवी, डॉ० पुनीत, द्विवेदी डॉ० मनमोहन, राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 वर्तमान परिदृश्य, चुनौतियाँ एवं समाधान, लक्ष्मी बुक पब्लिकेशन, महाराष्ट्रा, 2025, पृ० 5
2. सिरोही डॉ०महेन्द्र कुमार, विश्नोई डॉ०बालकृष्ण, नई शिक्षा नीति ओर रोजगार की संभावनाएँ, लुलु प्रकाशन, महाराष्ट्र, 2024, पृ० 9
3. सिंह, इंजीं अवनीश कुमार, नए भारत की नींव राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 2021, पृ०
4. मंगलिक रोहित, शिक्षा और समाज, एडुगोरिला प्रकाशन, बिहार, 2024, पृ० 6–7
5. शर्मा, डॉ० एस०के०, राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP), 2020 के अनुरूप गद्य, एसबीपीडी प्रकाशन, आगरा, 2022, पृ०14
6. राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020
7. गर्ग विकाश, शिवरंजन शर्मा, नेहा, भारतीय समाज और मूल्य आधारित शिक्षा, इंटरनेशनल चैनल ऑफ साइंस टेक्नॉलॉजी एंड मनेजमेंट।
8. प्रो० के०एल० शर्मा, दैनिक भासकर, जयपुर संस्करण, पृ० 2, 24 अगस्त 2020
9. गंगवाल सुभाष, नई शिक्षा नीति 21वीं सदी की चुनौतियों का करेगी मुकाबला, दैनिक नवज्योति, पृ० 22, 21 अगस्त, 2020
10. प्रकाश कुमार, 21वीं सदी की मांग पुरी करेगी नई शिक्षा नीति, आउटलुक हिंदी, 24 अगस्त 2021
11. राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार।
12. पाठक, आर०पी०, भारतीय समाज में शिक्षा, पियर्सन, नई दिल्ली, 2012, पृ० 117–121
13. शर्मा, श्रीमति कृष्णा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 एवं शिक्षा का स्वरूप, शाश्वत प्रकाशन, छत्तीसगढ़, पृ० 108
14. अमर उजाला, 28 मई, 2025
15. मालवी, डा० पुनीत, द्विवेदी डा० मनमोहन, पूर्वाद्धृत, पृ० 19
16. शर्मा, डा० एस०के०, पूर्वाद्धृत, पृ० 17
17. मंगवाल सुभाष, पूर्वाद्धृत, पृ० 27

ISARA INSTITUTE OF MANAGEMENT & PROFESSIONAL STUDIES

WWW.IIMPS.IN

EARN YOUR

MBA

Accreditation & Ranking

UGC / NCTE Approved.

INFO@IIMPS.IN

011-41005174

RESEARCH GATEWAY

STOP PLAGIARISM

1 Submit your content in Word File.

2 Get report in 48 hrs.

3 *Missing content or references will be fixed.

4 Citation for your work.

5 Get accurate user friendly report.

researchgateway.in | info@researchgateway.in

+91-9205579779

AROGYAM ONLINE

Arogyam Ayurveda

Holistic Healing through herbs

100% NATURAL

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

COLOR PSYCHOLOGY : HOW COLOR AFFECT YOUR CHILD

BLUE — Calms your Child's Mind & Body

YELLOW — Promotes Concentration, Stimulates the Memory

PINK — Evokes Empathy, makes your Child Calm

RED — Excites and energizes your Child's body

GREEN — Improves Reading speed and Comprehension

www.parivartan4u.com

Confuse about your children's future?

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY

ISSN – 2250 – 1959 (0) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMST.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF COMMERCE, ARTS AND SCIENCE

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (0) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE ENGINEERING AND TECHNOLOGY

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM

INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION

ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM

JOURNAL OF LEGAL STUDIES,POLITICS AND ECONOMICS RESEARCH

WWW.JLPER.COM